६२२५

श्री रूपरस-मालिका

(लघु)

रचयिता:—

रसिकेन्द्र राज पं० श्रीरामदुलारी शरण (रूपलता) जी
रसिक-भवन रास-कुञ्ज, जनकपुर-धाम।

622

श्री रूप-रस-मालिका

लघु

❋ झप ❋

वन्दो युगल पद श्री जनक किशोरी । महाराज श्रीमान् दश-
रथ नन्दन, अमल कमल पद मुनि चित्त चोरी ॥ १ ॥ श्याम गवर
छवि घन विजुरी सम राजित कनक मण्डप युग जोरी ॥ २ ॥ मन्द
ह ंसन जुल्फन लट लहात "रूपलता" छहरत चहुओरी ॥ ३ ॥

❋ पद ❋

जय जय श्री रामचन्द्र ! जयति जनक नन्दिनी ।
जय जय आनन्दकन्द जय आनन्द कन्दिनी ॥ १ ॥
जय कौशिल्या नन्दन, जय जय सुनैना नन्दिनी ।
जय जय जग वन्दन प्रभु, जय जय जग वन्दिनी ॥ २ ॥
जय किशोर जय किशोरी–जय जय भव भंजिनी ।
जय जय "रूपलतिका" दोउ, चख चकोर चन्दिनी ॥ ३॥

॥ सम्बन्ध ॥

स्वामिनी श्री मिथिलेश दुलारी ।
दश-स्यन्दन नन्दन स्वामी मम श्याम सुघर वर अवध विहारी

॥ १ ॥ सर्वेश्वरी श्री चन्द्रकलाजू आचार्या जेहि वस पियप्यारी
॥ २ ॥ नैहर सब रस खानि जनकपुर मुद प्रद अवध पुरी ससुरारी
॥ ३ ॥ श्री कृपावती, सखी धरि करते गर अब चिन्ता क्या ?
"रूपलता" री ॥ ४ ॥

॥ ध्यान ॥

पिया प्यारी कनक मण्डप राजे ।
हेम-कञ्ज जड़ी रत्न के सिंहाशन है ।
चन्द्र सूर्य्य अग्नि बीज मध्य आसन है ॥
दिशा जगमगा रही सुरंग प्रकाशन है,
लखि कोटिन कामरती लाजे ॥ १ ॥
क्षेमा स्वेत छत्र लिये खम खमाती है ।
हेमा हेम दण्ड चौर को ढुड़ाती हैं ।
विजन लक्ष्मणा सुभगा मूर्छल चलाती हैं ।
सब निज-निज सौज लिए गाजे ॥ २ ॥
सर्वेश्वरी चन्द्रकला बीणा को वजाती है,
नृत्य चारू शीला छुम छनन दिखाती है ।
मीठि-मीठि तान "रूपलता" गाती है,
सुनि-सुनि ललि लाल अधिक भ्राजे ॥ ३ ॥

❋ बधाई ❋

आलीरी ! नृप द्वार, बाजे बधाई बाजे ।
महरानीजू के पुत्र भए हैं, भीर अजिर अगार बाजे बधाई बाजे

॥ १ ॥ याचक जोइ जाचहि सोइ पावहि खुले कोश किवार वाजे बाधाई वाज ॥ २ ॥ सुर विमान चढ़ि आए गगन में बोले जय जय कार वाज ॥३॥ "रूपलता" शिशु सुभग रूपलखि गावे मंगल चार बाजे वधाई बाज ॥ ४ ॥

* बधाई *

वधाई अवध-नाथ जूके वाजे ।
पुत्र भए महारानी जू के सुखके नौवत गाजे ॥ १ ॥
अवध नगर की डगर बगर में घर-घर मंगल साजे ॥ २ ॥
याचक जन धरणी पट भूषण लुटत धनद लखिलाजे ॥ ३ ॥
धन्य राय रानी ते वर्णहिं [illegible] शिशु "रूपलता" जे ॥ ४ ॥

* बधाई *

मिथिला पुरी आजु मंगल सजोरी वधाइ वाजे ।
प्रगटी हैं किशोरी वधाइ वाजे ॥ १ ॥
रानी सुनयना को धन्य कहोरी ! वधाइ बाजे ।
नृप भाग्य जगोरी वधाइ वाजे ॥ २ ॥
रतन सिंहाशन पै आसन सजोरी वधाइ वाजे ।
सखिगण चहुओरी वधाइ वाजे ॥ ३ ॥
देव गगन चढ़ि सुमन झरोरी वधाइ वाजे ॥
करे जय जय सोरी वधाइ वाजे ॥ ४ ॥
याचक सकल अयाचक भयोरी वधाइ वाजे ।
लखि धनध लजोरी वाधाइ वाजे ॥ ५ ॥

सजि आरती गावे मंगल गोरी वधाइ वाजे ।
"रूपलतिका" नचोरी वधाइ वाजे ॥ ६ ॥

॥ बधाई ॥

बाजे-वाजे हो वधाई राजाजी के आंगना ।
मनोरथ महारानी जी के पूरे विधना
लाड़िली खेलेगी गोद में झुलेगी पलना ॥ १ ॥
गावें सोहिलो मङ्गल झुण्ड झुण्ड ललना ।
थेइ थेइ नाचे सब नर नारी मगना ॥ २ ॥
याचकों की भीर भारी घर द्वार आंगना ।
राजा जी लुटावे धन रानी हार कंगना ॥ ३ ॥
झरे सुमन विमान चढ़ि के सुराङ्गना ।
"रूपलता" त्रिभुवन रंगे येके रंगना ॥ ४ ॥

॥ बधाई ॥

आजु जनकपुर घर घर मंगल चन्द्रकला सर्वेश्वरी प्रगटी ।
रबिदिन सित वैसाख चतुर्दशी योग लगन ग्रहतारक सिमिटी ।
सीता-छठी जन्म तिथी इनकी दोउ उत्साह उदधि मिलि अवटी ।
जनक कोष रंकन लुटि लावहि चन्द्र भानु इत भरि भरि सकटी ।
जो जो सीता मुख लखि आए इनको लखि सो-सो कह न घटी
एकहीं सक्ति रूप दोउ धारे "रूपलता" नारद मुनि उघटी ॥ ३ ॥

॥ बधाई ॥

चन्द्र भानु-गृह वजत बधाई । श्री चन्द्रकला सर्वेश्वरी प्रगटी सीता अपर रूप श्रुति गाई ॥ १ ॥ इनकी कृपा कटाक्ष विना-नही कनक महल की प्राप्ति उपाई । सीता राम कमल कर इनके "रूपलता" विहरत नित माई ॥ २ ॥

❊ पद ❊

गुलशन में लाल लाड़िली के चश्म एक है ।
क्या टक-टकी सी लग रही घटते न टेक है ॥१॥
प्यारी पपीहा की दशा प्यारे चकोर से ।
होते न तृप्त एक दूसरों से नेक है ॥२॥
बे नयन की प्याला से पी-पी कर सुघर छवि ।
हैं मग्न ध्यान की नशा मस्ती कतेक है ॥३॥
जितनी थीं सिय की अली सबको यही दशा ।
"रसरूपलता" नेक नहिं तनुको विवेक है ॥४॥

❊ पद ❊

प्यारी सलोने श्याम ने चित्त को चुरालिया ।
उनकी छटा बर्णन करूं क्या ? होश ना हिया ॥१॥
बे [illegible] के अनूप भूप चक्कवे तनय ।
तिर्छी तकन सुवाण से बेधन हृदय किया ॥२॥
हैं मैथिली के योग्य, योग्य मैथिली उन्हें ।
"रस रूपलता" भाव को पूरण करें सिया ॥३॥

* पद *

विषधर नागिनी जुलुफ डँसीरी ।
अंग-अंग विष चढ़त छनहिं छन,
खड़ी बनत नहिं जात खसीरी ॥१॥
पुनि-पुनि हलत कपोलन पै चढ़ि,
लखि-लखि जीवन-आस नसीरी ॥२॥
मैं व्याकुल दर्दें ते कहरत, वेदर्दी प्रिय निरखि हँसीरी ॥३॥
अब वांचन पावो नहिं सजनी, "रूपलता" के प्राण फँसीरी ॥४॥

* पद *

जनि देखो सखी ! जुलुफ लटुरिया ।
देखत ही मरजाव री सजनी ! जुलुफ नहीं नागिन विषधरिया ॥१॥
अमित आशिकी मारि अलक ये हींसक निठुर शिरोमणि करिया ॥२॥ "रूपलता" फँसि समुझि बूझि करि काहकरूं मोहन मन हरिया ॥३॥

* पद *

करो जनि श्याम से कोई यारी ।
बाहर श्याम श्याम पुनि भीतर, जहँ देखो तहँ कारी ॥१॥
पहले प्रीति करत हँसि- हँसि के पीछे बनत सिकारी ॥२॥
तनिक दर्द लावत नहिं मन में छन-छन हनत कटारी ॥३॥
जोइ-जोइ प्रीति करी सोइ छानी तलफत "रूपलता" री ॥४॥

* पद *

मदछाके रसीली नयमां ।
देखते मन भैले बेचैनमां ॥१॥
भौंहें काम-धनुष जनु ताने, तिरछी चितवन चले बाने ।
तापै काजल करे कतलनमां ॥२॥
मन्द मुशुकन गजब करे भारी, वामे दमकत दशन कटारी ।
डोले मधुर-मधुर बुलकनमां ॥३॥
खेलैं कुण्डल कपोलन पै मीना, वामे चम चम चमके नगीना ।
फंसे रूपलता जुलफनमां ॥४॥

॥ पद ॥

रस वरषत कमल नयन से सखी ।
जित चितवत उत दशा नशा की, करत कतल हैं शयन से सखी ॥
करत विवस जब कहत कछुक हँसि, मोहनिमधुर वयन से सखी
"रूपलता" लखि ललकि-ललकि मन, हटि गये रति के मयन से सखी ॥

* पद *

अवध छयल भौंऐं तान नयना बान मारे ।
तिरछी तकन भरे काजर जहर कारे ॥१॥
श्यामली सुरति मन मोहनी मधुर छवि, विहँसि-विहँसि बोले बचन हिया को फारे ॥२॥ निशि दिन रहति बेचैन"रूपलता" पिय कैसेक बचुंगी डसि नागिनी जुलुफ कारे ॥३॥

* पद *

क्या कत्तल करते बेदर्दी छयल दशरथ के मुझे ।
खड्ग तिरछे नयन चितवन, धार खर सुरमा तुझे ॥१॥
लोल जुल्फें गाल पर कुण्डल तहां छल-छल करे ।
हलत मुक्ताफल चमाचम, दशन चमकत शशि दुजे ॥२॥
मौर केशर खौर शिर, पट-पीत भूषण जगमगे ।
चाल मत्त गयन्द "रूपलता" निरखि मन्मथ जुझे ॥३॥

* पद *

अवध के वांका छयल नयन वान मारारी ।
मैं तो अटारी पै रही श्याम सरको पै रहे ?
तिरछी तकन मयन फान डारारी ॥ १ ॥
मन को कहाँ लेजाउं ये तो श्याम ही पै धावे ।
सब सुख छार यह मान हारारी ॥ २॥
जब से वदन हेरे, मै हूं उन्हें ऊ हैं मेरे ।
"रूपलता" लोक कुल कान छाड़ा री ॥ ३ ॥

* पद *

अब क्या कहूं सखीरी ! जुलुमी सी बात होगी ।
सांवर कुअर के ऊपर कुल कान को तजुंगी ॥ १ ॥
मन वेग जोर ठाने, समुझाउँ तो न माने ।
रहता नहीं ठिकाने, किसिभांति ना सहुंगी ॥ २ ॥

विरहानलो की ज्वाला, सीतल करे वे लाला।
मुख-चन्द्र पै चकोरी "रूपलता" बनुंगी ॥ ३ ॥

॥ पद ॥

प्यारी सुधर सलोने करता कतल फिरें है।
मिथिला गली गली में तिय मौत सी गिरे हैं ॥ १ ॥
मुशु क्यान जादूओं से कामिनी बेचैन किन्हें।
बोली सुना-सुनाकर मृदु चित्त को चिरे हैं ॥ २ ॥
भूषण वसन के चमकन रमणी के अंग दैके।
"रसरूप" को छटापट करते वे वेपिरे हैं ॥३॥

॥ पद ॥

बड़ि-बड़ि नैना नयनों में गड़ गई।
छूट पटाउ निकसे नहीं सजनी, नोक लम्बी अड़गई ॥ १ ॥
काल कूट सम कारी कजरिया, अंग-अंग विष चढ़गई ॥ २ ॥
"रूपलता" चख सर धोखा वस, हाय मैं मरगई ॥ ३ ॥

॥ पद ॥

मेरे मन गड़ गये कमल नयन कोर।
दूरहि ते वेधेउ तिरछो करि, तन मन वचन मैं भइडूं-सखि! विभोर ॥ १ ॥ टकरत लट लटुरी कुंडल श्रुति, पान की ललाइ नाशा मणि हलरत ठोर ॥ २ ॥ करिके कतल छोरत बित्तवर सब, चतुर चूड़ामणि हैं "रूपलता" चित चोर ॥ ३ ॥

॥ पद ॥

कतल करें सखि ! कारी कजरीया ।
अमल कमल दलहूं ते सुन्दर, अनियारे, रतनारे नजरिया ॥ १ ॥
कनिक कोर चुभि गई हृदय मह, अंग-अंग चढ़े ताप तिजरिया ॥ २ ॥ स्वप्नहु सुरमा सुरत परतहीं "रूपलता" नहीं भावे सेजरिया ॥ ३ ॥

॥ पद ॥

जनि मारो नयन सर बाण रे ।
काजर जहर के जल सिच्यो फर, श्रवण शील दै शान रे ॥१॥
खर मनोज-धनु हूं ते खैच्यो, भौंहें तान कमान रे ॥२॥
चक्र शूल पवि सहश पवारहु, सहि हौं बहुत आसान रे ॥३॥
"रूपलता" नयनहुं सर सहतेउ, जौं न मधुर मुसुक्यान रे ॥४॥

॥ पद ॥

सुरतिया श्यामली भावे । बदन पै मदन छवि छावे ॥१॥
हँसन पै चन्द्रद्युति मन्दे, दशन दाड़िम को सकुचावे ॥२॥
जुलुफ डोले कपोलन पै, डसन जनु नागिनी धावे ॥३॥
विकशि रहे "रूप" के कंजे, भँवर आशिक लुबुध जावे ॥४॥

॥ पद ॥

श्यामली सुरतिया देखे, बिना न माने जिया ।
चन्द्र बदन पर जुल्फें छोडे, अलि अवलि की पतिया ॥

मन्द-मन्द मुसुक्यान लालके, जारे मेरी छतिया ॥१॥
रस बोरे रसना से निकसत, मीठी-मीठी बतिया।
तिरछी तकन कलेजा बेधे, नीन्द परे नहिं रतिया ॥२॥
रूप-माधुरी "रूपलता" को, हर लीन्ही गति मतिया ॥
तन मन सकल वारि लालन पर, येके यहि गतिया ॥३॥

॥ पद ॥

जादू नयन वाण में है, भृकुटी कमान में भी ॥
लाली मुख-पान में व, मन्द मुसुक्यान में भी ॥१॥
जादू भरी गाल परि ब्याल से डोलैं अलकैं।
तिरछी तकान में व, काजल कृपान में भी ॥२॥
पाग शिर-पेच कलँगी, कूट में भी हैं जादू।
कुण्डल सुकान में, नाशा-मणि हलान में भी ॥३॥
जादू अंग-शान मे हैं, पट फटरान में भी।
"रूप" की लतान में है, छवि अभिमान में भी ॥४॥

॥ पद ॥

श्याम मारे सब जग नगरिया री। दिल कहमाँ ले जाउं ॥ चन्द्र-बदन पर लट-छवि छहरत, नागिनी-सी जुलुमी जहरिया रे दिल कहमाँ ले जाऊं ॥१॥ भौंए कमान पै कमल नयन-सर, कतल करे क्या ? कजरिया री। दिल कहमाँ ले जाउं ॥२॥ पान-खात मुसुक्यात दशन द्युति जनु बिम्बफल में इजोरियारी दिल० ॥३॥ "रूपलता" लहरात हिया में, भावे न घरबन सेज-रियारी। दिल कहमां ले जाऊं ॥४॥

॥ पद ॥

हृदय में श्याम धर लूंगा, तो फिर जाने नहीं दूंगा।
करो विश्राम इसमें तूं ये कनक महल तेरा ही है॥
निकरना जो तू चाहेंगे, तो दृग-पट बन्द कर दूंगा॥१॥
सुमन पलंगा पै बिहरो तू, सुमति सब साज को साजे।
सुरुचि के संग में तेरी सुरति दासी बना दूंगा॥२॥
सकल दिशि "रूप" की लतिका जगामग खूब लतरेगी।
हृदय साम्राज्य के शासन तुम्हारे हाथ कर दूंगा॥३॥

॥ पद ॥

सखि ! जिया शाले जुलुफ घुंघुंरारी।
रमकि चमकि हलरत कपोल पै चिक्कन कच अति कारी जुलुफ घुंघुंरारी॥१॥ भौंएं काम धनु तिलक तीन सर तिरछी तकन कटारी जुलुफ घुंघुंरारी॥ २॥ हँसन मन्द मुक्ताफल हलरन, कुण्डल नृत्त पसारी जुलुफ घुंघुंरारी॥ ३॥ मनमोहन छवि श्याम सुघर लखि बावरि "रूपलता" री जुलुफ घुंघुंरारी॥४॥

॥ पद ॥

श्याम सुन्दर की सुखमा लखोरी अलि !
अङ्ग-अङ्ग अनङ्ग अनेक छली॥१॥
श्रुति कुण्डल अलकें कपोल हलैं।
नाशामणि शुक्र से मन्द हली॥२॥

भाल मोहन तिलक भ्रुव काम धनु ।
टेढ़ि चितवन मन्मथ तीर चली ॥३॥
पेन्हे धोती पियर ओढ़े चद्दर जड़ी ।
हँसि आते हैं "रूपलता" की गली ॥४॥

॥ पद ॥

गजब करे रघुनन्दन हो तकन तेरी ।
ललित कपोल पर डोलत जुलुफ कारी ।
चन्द्र चान्दनी-सी मन्द-मन्द हो हंसन तेरी ॥१॥
अधर ललित लाली, पान की अति निराली ।
मोती-लर चमके अमन्द हो दसन तेरी ॥२॥
नाशामणि हलन छलन नव नागरि के ।
"रूपलता" फँसे फन्द चितवन तेरी ॥३॥

॥ पद ॥

सखिरी ! नजर भर देखो श्यामसुन्दर, आज दुल्लह बने-५। आज दुल्लह बने ॥ पेन्हे जामा केशरिया पिताम्बर लसे, कोरदार पाट पटुका में हंसिया हंसे । मौर सोहे शिरपर हिरामणि मोती लर, आज दुल्लह बने-५ ॥ १ ॥ बड़ि-बड़ि आँखे कोरदार काजर किए, भाल पै केशर खौर हरे सबके हिए । अंग-अंग विभूषण जगामग नग वर आज दुल्लह बने-५ ॥२॥ पान की ललाई छाई अधरों में सुहंसन, चमकत चमाचम

दाड़िम बीज दशन, सब "रूपलता" पर, करने चाहति वर आज दुल्लह बने-५ ॥३॥

॥ पद ॥

देखलो आलीरी ! ये दुल्लह ललाम हैं।
जिनके अनूप रूप छकित कोटि काम हैं ॥१॥
प्रति अंग-अंग कलित ललित रङ्ग श्याम हैं।
दशरथ के लाल बाल ललन रामनाम हैं ॥२॥
पटपीत क्रीट खौर मोतिओं के दाम हैं।
सखि "रूपलता" बौरि-सी मिथिला के वाम हैं ॥३॥

॥ पद ॥

कौशिल्या के छोरा ये दुल्लह बने हैं।
हरत मन मोरा जो दुल्लह बने हैं ॥१॥
सुश्याम स्वरूप हैं कामो ते सुन्दर,
किशोरी की जोरा ये दुल्लह बने हैं ॥२॥
हलत मौर नाशामणि माल कुण्डल,
नचाते हैं घोरा ये दुल्लह बने हैं ॥३॥
ये दुल्लह सिया के व "रूपलता" के,
सकल चित चोरा ये दुल्लह बने हैं ॥४॥

॥ मङ्गल ॥

आज जनक मन्दिर महं कछु न सुनत परि हे।
बाजहिं बाजन घोर सोर दशदिशि भरि हे ॥१॥

विबुध वधू नभ नृत्यहि गान सुख करि हे।
मुनि जन मन्त्र उचारहिं देव सुमन झरि हे ॥२॥
रविकुल रीति बतावहिं महिसुर तनु धरि हे।
श्रुति कहि ब्याह विधान रामवर बिधि करि हे ॥३॥
सखि सब मङ्गल गावहिं "रुपलता" गरि हे।
सिय सिर सिन्दुर राम देत मुठिअन भरि हे ॥४॥

॥ सिन्दूर-दा

कैसे श्याम ये सुघर वर सिन्दुर उठा रहे हैं।
जनु इष्टदेव सीता शिर पर चढ़ा रहे हैं ॥१॥
चिरकाल केश करके संयोग हो रहे हैं।
तेहिते सिया के कुन्तल पिय करसे मिल रहे हैं ॥२॥
सखी युत्थ में सुदुल्लह सिन्दुर लगा रहे हैं।
जनु मानिनी सिया को प्यारे मना रहे हैं ॥३॥
"रुपलता" समन्त्रों से कर चला रहे हैं।
मोहन बशीकरण ये जनु शर चला रहे हैं ॥४॥

॥ मङ्गल ॥

राम दुल्लह सिया दुलहिनी बैठे मण्डप तर हे।
माइहे ! सिर सोने के मौर मणिन मय झालर हे ॥ १ ॥
ब्याह-पीत-पाटाम्बर दल-कङ्कण कर हे।
माइहे ! उर शशिहार विराजित गज मोतियन लर हे ॥ २ ॥
बिहँसत पान चबावत, चित्त चितवन हर हे।
माइहे ! "रुपलता" मन भावत, सिय दुलहिनी वर हे ॥ ३ ॥

॥ पद ॥

न ऐसा दुल्लाहा दुलहिनी कहूँ देखा न देखेंगे।
नजर भर जो लखा फिर वह न वर दुलहिनी को देखेंगे ॥ १ ॥
ए चितवन मन्द यह मुशुकन, छटा की माधुरी द्वौ की
परस्पर एक दूसर के नफिर अनुरूप देखेंगे ॥ २ ॥
ए नागर यह उजागर हैं, ए गुण सागर सुखागर द्वै।
वे "रूपलता" निछावर सब जो देखा हैं जो देखेंगे ॥ ३ ॥

॥ पद ॥

राम दुल्लह सिया दुलहिनी बैठे मण्डप तर हे।
शिर सोने के मौर मणिन मय झालर हे ॥ १ ॥
ब्याह पीत पाटम्बर दल कङ्कण कर हे।
उर शशि हार विराजित गज मोतियन लर हे ॥ २ ॥
विहंसत पान चवावत चित्त चितवन हर हे।
"रूपलता" मन भावत सिय दुलहिनी वर हे ॥ ३ ॥

॥ पद ॥

अनूठीं आलिरी ! यह जोरी। दोउन के दोउ चन्द्र चकोरी ॥ १ ॥
श्याम समलिया गौर किशोरी। हरित द्युति चहुओरी ॥ २ ॥
श्याम किशोरी सियाजु किशोरी। तनिक वयश की थोरी ॥ ३ ॥
"रूपलता" के दोउ चित्त चोरी। निरखि अपन पौ भोरी ॥ ४ ॥

॥ पद ॥

युगल छवि निरखत नाहि अघाउं ।
अमित छवि चख दुइ दिन्हे विधि, ललकि २ रहिजाउं ॥ १ ॥
रोम-रोम अंखिया यदि होती तउं सन्तोष न पाउं ॥ २ ॥
"रूपलता" नयना यह चाहति, रूपसुधा पी जाउं ॥ ३ ॥

* पद *

धन्-धन् युगल सरकार ये तुम्हारी झांकी ।
श्याम गवर जोरी उपमा सकल थोरी निन्दत सुदम्पति हजार ये तुम्हारी झांकी ॥ १ ॥ पीत पिताम्वर सोहे, निरखि मदन मोहे, मोतियन झालर किनार ये तुम्हारी झांकी ॥ २॥ क्रीट चन्द्रिका राजे, कुण्डल ताटङ्क भ्राजे नाशा मणि झुलनी वहार ये तुम्हारी झांकी ॥ ३ ॥ अंश भुजन धारे, "रूपलता" के प्यारे मोहे सकल संसार ये तुम्हारी झांकी ॥ ४ ॥

* पद *

सिय पिय रूप परस्पर झांके ।
अंश भुजन धरि रसिक रशीली नयन सयन करि वांके परस्पर झांके ॥ १ ॥ पिय की छवि पीवत सिय प्यारी प्रीतम सिय-छवि छाके परस्पर झांके ॥ २ ॥ लाल ललीपर होत निछावर लली वलि जात पिया के ॥ २ ॥ अलिगण भाग्य सराहि निरखि रहि, ध्यान ये "रूपलता" के ॥ ४॥

* पद *

अति सुघरी सुघर दोउ प्यारी पिया ॥
रघुनन्दन श्री मिथिलेश धिया ॥ १ ॥
नील कमल रघुवंश लाड़िले, पीत सुचम्प कलीसी सिया ॥ २ ॥
प्रीतम छवि तरुवर तमाल से स्वर्ण लता सी लिपटि प्रिया ॥ ३ ॥
स्याम सजल घन सिय विजुरी सी "रूपलता" तरसे ये अंखिया ॥ ४ ॥

* पद *

युगल जोरी को सखि ! देखो-देखो ।
नयन सफल करि लेखो-सखि ! देखो-देखो ॥ १॥
श्याम सीय पिय गौर वरण भय, वरणि सके नहिं
शेषो सखि ! देखो-देखो ॥ २ ॥ पिय सिय को सिय पिय यकटक लखि अलिगण तजेउ निमेखो सखि ! देखो-देखो ॥ ३ ॥ ये दोउ "रूपलता" के भाग्य फल छन-छन हृदय परेखो सखि ! देखो-२ ॥ ४ ॥

॥ पद ॥

पिया प्यारी की झांकी ये वांकी सखी !
है उपमा कहीं नही जाकी सखी ! ॥ १ ॥
अङ्ग-अङ्ग पट विभूषण से ढांकी सखी !
तोभी चमके मयूखें छटा की सखी ॥ २ ॥
मन्द मुशुकन गजव करे याकी सखी ! ।

डोले नाशामणि ओ बुला की सखी ॥ ३ ॥
करि तिरछी नयन हंसि ताकी सखी !
हिय कशकत "रूपलता" की सखी ॥ ४ ॥

※ पद ※

निरखिय चन्द्र चन्द्रिका आली।
श्याम गौर दोउ मधुर मनोहर-जनु विजुली घनकाली ॥ १ ॥
चितवन अरुण ललित अधरारुण, कर पद कञ्ज सुलाली ॥ २ ॥
दाड़िम-दशन हंसन की सुखमा, वसन पीत वनमाली ॥ ३ ॥
सवहीं मगन मन "रूपलता" पर डसि अलक-अहिकाली ॥ ४ ॥

※ पद ※

अनूप रूप श्याम गौर नयन-फल आली !
देखने विना न चैन एको पल आली ॥ १ ॥
किशोरी जी के वदन चन्द्र में रेखा राघो !
निहारती चकोरी सी विभोर थल आली ॥ २ ॥
बड़ी-वड़ी सुआँखे अनियारे हैं रतना रे।
मीन खञ्ज मृगी या राजीव दल आली ॥ ३ ॥
चोटी उरझि जुलुफ जाल में सुरझात नहीं।
मानो "रूपलता" में करे दखल आली ॥ ४ ॥

※ पद ※

श्री रामचन्द्र से हैं सुन्दर जनक किशोरी।
छवि काम वे अनेकों रति-काम ये कड़ोरी ॥१॥

पिय शारदी निशा है, सिय चन्द्र हैं वहाँ पर ।
घनघोर घटा राघो, बिजुली जनक किशोरी ॥२॥
मणि राम ज्योति सीता, पिय दीप टेम प्यारी ।
अहि लाल प्राण-बूटी, मोती जनक किशोरी ॥३॥
पिय की है श्याम सूरत, सिय छाँह के बराबर ।
"रूपलता" पिया के, भूषण छवि किशोरी ॥४॥

❊ जेवनार ❊

सखि ! श्याम सुन्दर सिया छवि पर बलि-बलि जाऊं ।
भोजन करत श्याम श्यामा संग, हमसब हिलमिल गाऊं ॥१॥
ठुमुकि-ठुमुकि सखी परुसन लागी, छुम छुननन बोले पाउं ॥२॥
कोउ सखी बरणहिं स्वाद-भेद गुण, कोउ सखी बरणहीं नाऊं ।।
नहीं-नहीं करत धरही तनि-तनि बहु, प्रेम-बिवस न अघाउं ॥४॥
अलिगण गावहिं रुचि उपजावहिं, "रूपलता"ग न माऊं ॥५॥

॥ जेवनार ॥

रघुनाथ कुअर संग जेवती जनक दुलारी ।
भोजन कुञ्ज में जेवन बैठे, सखि सब पारति गारी ॥१॥
जो तू लाल बहिनी को देहों, सुन्दर दूंगी सोहारी ॥२॥
जब सरयू भावी मेरी बनि हैं, तब दूंगी तरकारी ॥३॥
चटकदार चटनी दूंगी कहु, सान्ता सन्त की प्यारी ॥४॥
भुजुआ भाजा मैं दूंगी तब, कहु सरयू को हारी ॥५॥
जबर कहाई ठठाई हँसी सब, "रूपलता" बलिहारी ॥६

॥ जेवनार ॥

भोजन करत लाल लली हिलिमिलि, चन्द्र-बदन छवि छाई रही।
चमकि चमकि सखि परुसन लागी, छवि लखि रति ललचाई रही।
पूरी कचौरी पूआ पापर, कोउ खुरमा बरषाई रही ॥१॥
खाजा खांड़ जिलेबी बरफी, रसगुल्ला कोउ लाई रही ॥
कोउ मोदक मिश्री माखन कोउ, कहूं बहाय मलाई रही ॥२॥
कोउ अचार चटनी तरकारी, भुजुआ भाजा दिखाई रही ॥
कोउ सिखरन सिरका निमकी कोउ, कहि गुण अधिक पवाई रही
कोउ सखी मधुर-मधुर स्वर गावहिं, कोउ सखी मधुर बजाइ रही
विहंसि २ जेवत परिकर युत "रूपलता" बलि जाइ रही ॥४॥

॥ पान अर्पण ॥

पाइये पान मसालेदार।
नागर पान शान के दल हैं, पक पीत रंगदार ॥१॥
लवंग लांचि पूंगी कथ किमती, चूना मोती सार ॥२॥
पीपरमिन्ट हीरा-रस मादक, खुशबू खूब बहार ॥३॥
"रूपलता" बीरा बड़ियाँ रचि, तबकदार फबि मार ॥४॥

❋ फाग ❋

जुलुम जालिम करें सजनी ! रसिकवर लाल फागुन में।
छिड़कि रहे रंग पिचकारी गयल छपि छयल फागुन में ॥१॥
पकरि पट-खोलि नीवी को, वो चोली बन्द झट तोरे।

गलत मुख-रंग जो फँसिजात नवला बाल फागुन में ॥२॥
निहोरा एक नहीं माने न "रूपलाता" बहाने भी ।
भरत नयनन जबर्दस्ती अबीर गुल्लाल फागुन में ॥३॥

* फाग *

मुझे राज-कुमार ! समुझि बूझि रंग धरना ।
मैं हूं उमर की थोरी, करो न बरजोरी रसिया तूं गमार ॥१॥
है बहु मोल की सारी जड़ी है किनारी, किया आजै शृंगार ॥२॥
अभी सखी सुनलेगी, दौरि धर लेगी, भागिजावो सुकुमार ॥३॥
सखि धरि तिय वेष बनैहैं, सुखूब नचैहैं, रूपलता उर-हार ॥४॥

॥ फाग ॥

रसिया मो पै आँखों से डारा अबीर ।
आँखों से डारा आँखों में डारा, भीजे सकल शरीर ॥१॥
भौंवे दंड नयन पिचकारी, चितवन ही रंग-नीर ॥२॥
हँसन कपूर-धूर वच कुम-कुम, छन-छन हनत बेपीर ॥३॥
"रूपलता" सुधि-बुधि भोरी भई, सिथिल कंचुकी-चीर ॥४॥

॥ फाग ॥

न मारो रंग सारी पर हजारों गालियां दूंगी ।
अरज मानो यदि ना तुम, कसर मैं भी चुका लूंगी ॥१॥
ये सारी दाम के भारी, न होली की मजा की है ।
पठाई मां है मिथिला से कहो ? कैसे भिजाऊँगी ॥२॥

पहिरी आउँ पिताम्बर को, तो होली खेलना हमसे ।
जरा "रसरूप" ठहरो तूं, विजय मैंने लिखालूंगी ॥३॥

*** फाग ***

न रगरो रंग शर ऊपर जुलुफ सुन्दर बिगर जावे ।
करो प्रियवर तूं वरुआरी, रगर मुझको न उर भावे ॥१॥
अनूठी मोतीलर चोटी सम्हारिन हैं चतुर आली ।
जुड़ा जुल्मी कहर कारी नजर पिय तोहि अटकावे ॥२॥
ऐ ! करते हो अनख मुझ से न होली के कदर जाने ।
सम्हल करके तु अब रहना, मजा "रसरूप" दिखलावे ॥३॥

*** फाग ***

बाँके वालम ने वहियां मरोर डाला ।
औचक रंग लगाय रंगीले, कर-धरि-धरि झिक झोर डाला ॥१॥
बह अवधेश छयल न दरद डर, उर पिचकारियां कड़ोर डाला॥२॥
अरज करूं ज्यों-ज्यों त्यों हँसि-हँसि रंग रसिया रंग बोरडाला
"रूपलता" अधरण कपोल को, चुमि-चुमि वह चितचोर डाला ॥

*** फाग ***

सखीरी ! अवध छयल की होरी ।
कुंज-कुंज मग गलिन-गलिन में, धरत रंग बरजोरी ॥१॥
अरज करत अरजो नहीं मानत, पकरी मले मुख-रोरी ॥२॥

बह रसिकेश नरेश चुमि मुख, अंग-अंग झिकझोरी ॥३॥

"रूपलता" सहिजात न क्यों अरि ! करिय मेल पकरोरी ॥४॥

* फाग *

तब फागुन की खूब मजा आयगी ।

प्यारी प्रीतम में होली मचल जायगी ॥१॥

जब उमड़ेगी फौजें रुकेगी नहीं,

अली युत्थें में युत्थें झगर जायगी ॥२॥

सखी झुण्डों में प्रीतम घुसेंगे जभी ।

पिचका घन-घोर झरी लायगी ॥३॥

अलि व्याकुल ह्वै-ह्वै "रूपलता" पिय पकरि के नांच सुनचवायेगी॥

॥ होली ॥

आज रंग होली के वहार रे वलमुआं ।

खेलने को हो जावो तयार रे वलमुआं ॥ १ ॥

अवीर गुलाल कूम कूम केशर अमित रंग की ढेरी है ।

हौज-हौज रंग घोरी-घोरी के इत्र अरगजा केरी है ।

भरे पिचकारियां हजार रे वलमुआं ॥ २ ॥

पकरि गुलाल गाल में मलिहौं हौज-हौज में वोरूंगी ।

लहङ्गा सारी शृंगार साजी के नारी वनाकर छोडूंगी ।

"रूपलता" प्रण ए हमार रे वलमुआं ॥ ३ ॥

॥ होली ॥

नहीं छाड़ू सजन रंग डारूंगी ।
अवीर गुलाल अरगजा प्रीतम !
भरि गागरी शिर ढारूंगी ॥ १ ॥
गेन्द कुम कुमा कुशुम छड़ी भरि-भरि पिचकारियाँ मारूंगी ॥२॥
चोली चुन्दरी विविध विभूषण सजि तिय वेष संवारूंगी ॥३॥
„रूपलता" मेहदी लगाइ पद कमल-नयन कजरारूंगी ॥ ४ ॥

॥ फाग ॥

होली में लली लाल को छल से पकर लिया ।
विल्कुल शृंगार साजिके नारी वना दिया ॥ १ ॥
सखी झट से लखन लाल-रूपको वनालिया ।
नव नागरी को देखि वे घुंघट उठा दिया ॥ २ ॥
श्यामा तूं गौर हूँ मैं व्याह करलिजे प्रिया ।
जोरी वनेगी खूव चुम्बि रंग भर दिया ॥ ३ ॥
कहि "रूपलता" ये अवध-नरेश की धिया ?
पट-खोलिके लज्जित किये हंसि तालिदै तिया ॥४॥

॥ फाग ॥

होली खेलत सिय रघुवीर ।
रहसी थल कञ्चन विपिन वर-दिव्य विरजा तीर ॥ १ ॥
समर रचना युगल दिशि-कहि जात नहिं कवि-धीर ।

युत्थ-युत्थ विभाति अलिगण-साजि भूषण चीर ॥ २ ॥
बिपुल अबिर गुलाल कुम-कुम, हौज भरि रंग नीर।
सुमन कंदुक रंग डोरी चोवा-चूर कोशीर ॥ ३ ॥
भिरत दोउ-दोउ परस्पर भये तुमुल युद्ध गंभीर।
उड़त वरषत रंग चहुंदिशि घोर अगम समीर ॥ ४ ॥
जनक लली की फौज उमड़ी भागि पिय तजि धीर।
धाइ "रूपलता" पकरि लइ लाइ स्वामिनी तीर ॥ ५ ॥

॥ फाग ॥

खेलत फाग अनुराग में भरि-भरि।
जनक-लली रघुवंश लाड़िले,
संग युत्थ युत्थन अलि करि-करि ॥१॥
उड़त गुलाल लाल भय बादल,
झहरत पिचकारी घन घरि-घरि ॥२॥
लाल को लपकि लईं धरि अलिगण,
सखा युत्थ भागे सब डरि-डरि ॥३॥
"रूपलता" हंसि तालि बजावहिं,
नचवहिं दौरि-दौरि अलि धरि-धरि ॥४॥

॥ होली ॥

पिया सिया के संग खेले होरी।
उत रघुनन्द चन्द अनुजन युत, इत निमिराज किशोरी।
कोउ कुम-कुम पिचकारी करमें, लीन्हे कोउ रंग-झोरी ॥१॥

कोउ अबीर धूली उड़ि आवे, कोउ केशर कस्तूरी।
पिचकारी वरषे घन सावन, कोउ मरदे मुख रोरी ॥२॥
कोउ नागरि शृङ्गार पिया को, करे चुमे मुख-मोरी।
प्यारी चरण छुवाई नचावे, "रूपलता" बरजोरी ॥३॥

॥ फाग ॥

सिया संग में पिया फाग मचावे।
कला पै अमित रति काम लजावे ॥१॥
गाते हैं बजाते नाचते हैं कभि प्यारे।
किशोरी-कपोल पै रंग लगावे ॥२॥
प्यारे को रंग छापती किशोरी मजे से,
दुकूल पै फूल विचित्र बनावे ॥३॥
पिया प्यारी रंग के जंग डटे हैं,
"रूपलता" रस ये कोउ पावे ॥४॥

॥ फाग ॥

पिया तिय-रूप बनाना पड़ेगा।
सजि सोलहो शृगार मनोहर, सखी मन मोद बढ़ाना पड़ेगा ॥१॥
श्रावण झुलन झोंक के बालम, यही अब दंड चुकाना पड़ेगा ॥२॥
कहि जय-जय प्यारी विजय तुम्हारी,
प्रिया पद शीश झुकाना पड़ेगा ॥ ३ ॥
किशोरीजी को "रूपलतिका" रिझाके,
क्षमा निज दोष कराना पड़ेगा ॥ ४ ॥

॥ रथ यात्रा ॥

लाल-लली दोउ रथ चढ़ि आवत ।
चक्र सु चतुर खंड चतुराबृत श्रीमानस-जा तट पर धावत ॥ १ ॥
सखिन सहित राजित सिंहाशन, छत्र विजन वर-चवर ढुरावत ॥२
बीण मृदंग साज सब बाजहि "रूपलता"दिक अलिगण गावत ३

॥ पद ॥

रथ पर राजित युगल किशोर।
स्वर्ण रचित मणि खचित मनोहर, हलरत मोतियन छोर ॥ १ ॥
श्याम कर्ण वर अष्ट अश्व अति चञ्चल मुनि-चित्त चोर ॥ २ ॥
श्री सरयूग तट चलहिं चतुर्दिशि, "रूपलता" दि विभोर ॥ ३ ॥

॥ झूला राग सूहो ॥

जनक-पुरी सुहावनि श्री कमला के किनार ।
रुचिर-रुचिर वर मणि-मय ललित महल विस्तार ॥
महि पय-फेन लजावन, सुर-पादप के कतार ।
रुचिर पुरी मुनि-मन मृग हित वागुर रचि मार ॥
छंद-जनु काम-जाल विचित्र पुर वन वाग कूप तड़ागहीं ॥
कुशुमित सु तरु जल-जात गुंजहि भवर खग वर बागहीं ।
मग राज-मार्ग समान वहु रमणीक चौक विथिन सिंचा ॥
सुत वन्दि मागध सुयस वर्णहिं मुनि उच्चारहिं श्रुति-ऋचा ॥१॥
सकल-देश-नृप आवहिं वाजहि विविध निशान ।

विद्याधर कल गावहिं सुनत तजहिं मुनि ध्यान ॥
पुर-नर सब गुण गायक, नागर सन्त सुजान।
तिमि कमला-मद-मोचनी, तिय गुण शील विधान ॥
छंद-गुण शील खानि सु चन्द-मुख-दामिनी-दशन गज-गामिनी।
पिय प्यारी-रहस रसज्ञ सब, गत मोद मय दिन यामिनी।
ऋतु सरिस करहिं विहार विभव अपार श्री लखि लाजहीं।
पावस हिड़ोल विचित्र रचना सहित भामिनी साजहीं ॥ २ ॥
श्री कमला-तट राजित, महल विपुल आराम।
चित्रित मुनि-मन खैंचहिं, जनु विरचेउ रति-काम ॥
कुण्डी सुहण्डि विराजित झाड़ गिलाशी ललाम।
घन उडु-गण शशि जिमि नभ-चान्दनी मणि मय दाम ॥
छन्द-चान्दनी ललीत विचित्र परदा-जड़ी मखमल महि बिछे।
जहँ-तहँ विजन कलदार कुरसी बिविधि भेद पुरः पिछे ॥
गमला अमित लघु तरु प्रफुल्ल फुहार बहु मुकुरा वलि।
खग अवलि कूंजहि पिञ्जरन महं-तहं हिड़ोल सजहि अलि ॥३
युग-युग खंभ मणिन मय, मणि मय पलना विशाल।
चित्रित मणि मय मेहराफ, लट के लटुक मणि-माल ॥
मणि-खग पवन ते कूंजहिं, मणि-जेबरी मणि-जाल।
मणि मय अलिगण चहुदिशि, मणि मय सिय रघुलाल ॥
छन्द-रघुलाल मणिमय जनक-नन्दनी-ललित झूलन पर लसे।
झूलहिं झुलावहिं सखिन निज-निज वार हुलसी-हुलसी हंसे ॥
अलि छत्र चामर विजन बहु विधि-साज धरि कर राज हीं।

नृत्यहिं युगल सखी अपर कर-वर वाद्य विविधि सु वाजहीं ॥४॥

पावस-राग अलापहिं, अलि पिक-स्वर भरि भाव ।
पग-लटकनि कटि लचकनि-दृग मटकनि कर हाव ॥ १ ॥
मुख-मोरनि विहंसनि निज-चमकनि पिय तरसाव ।
करहिं कौतुहल वहु विधि, मुद-अम्बुद वरषाव ॥

छन्द-वरषाव मुद-अम्वुद विसरि सव, प्रेम वस सुधि देहको ।
नभ सुमन वरषहि देव-गण, वरणहिं सखिन नव नेह को ;
यहि भांति दिन प्रति झुलहिं नूतन-कुंज में नूतन विधि ॥
वलि जाहिं "रूपलता" सकल पिय-प्यारी लखि दोउ-
छवि-निधि ॥ ५ ॥

॥ झूला ॥

झुले रसिक-वर झूलना कमला के किनार ।
रे सम-डोर सु पालना लागे कदम के डार ॥ १ ॥
फूले कमल वर फूलना करे भवर गुंजार ।
कुशुमित तरु खग वोलना देखो ! कैसा वहार ॥ २ ॥
गरजी-गरजी घन घोरना झम झमके फुहार ।
चमके चपल चहुओरना त्रय पवन पसार ॥ ३ ॥
झोकत झोका जोरना श्रीराज-कुमार ।
"रूपलता" डरि मैथिली रघुवर उर-हार ॥ ४ ॥

॥ झूला ॥

झुला-झुलन छविली इठलाती चली ।

कुशुमी चीर पहिरि चोली-कसि

अञ्चल-पट फहराती चली ॥ १ ॥

ठुमुक-चाल भूषण-स्वर झमकत ।

कवरी लट छिटकाती चली ॥ २ ॥

"रूपलता" लिए संग सहेली ।

चमकि दमकि सब गाती चली॥ ३ ॥

॥ कजरी ॥

घर-घर सोर जनक-पुर भारी-झूलत जनक दुलारी ना ।

देखन चली झुण्ड झुण्डन मिलि, सजि पुर नारी ना ॥ १ ॥

सजि आरती उतारहिं भामिनी तन-मन वारी ना ॥ २ ॥

कोउ झोकहिं कोउ साज बजावहिं नृत्यहिं न्यारी ना ॥ ३ ॥

अमित जयति बहु सुमन वृष्टिकरि-"रूपलता" री ना ॥ ४ ॥

* झूला *

झूले रंगीली ललिलाल झुला लाले-लाले ।

विपिन प्रमोद लाली-लाल फल-फूल वाली ।

लाल महि रचित प्रवाल-झुला लाले-लाले ॥ १ ॥

सरयू सरित लाली-लाल कमल वाली

लाल-लाल भवर के माल झुला लाले-लाले ॥ २ ॥

बाल-लाल युत्थ आली-भूषण वसन लाली ।

"रूपलता" लाली राग ताल ॥ ३ ॥

॥ झूला ॥

अपने सुघर श्याम सैंयां को झुलावोरी !॥
कोउ लावो रतन रचित वर पलना को, कदम की डारी डोरी पाट की लगावोरी ॥ १ ॥
शावन सरिस सु शृंगार साजि साजन को। झमकि-झमकि झोकि दृगन जुरावोरी !॥ २ ॥
सरयू के तीर कुंज श्रावण में 'रूपलता'' चलु सव सखिया सहेली को बुलावोरी ॥ ३ ॥

※ झूला ※

दोउ सघन सु सावन कुञ्ज झूले।
जहाँ विपिन प्रमोद फले औ फूले ॥१॥
लीलाचल शिखर पर हिंडोला लसे।
जहाँ रिमि झिमि मेघ सदा बरषे ॥
श्री मानस दुलारी के दक्षिण कूले ॥२॥
जहाँ त्रिविध समीर सदा रमके।
पुष्प-गन्ध दिशा महं महं महंके ॥
खग कूजे भँवर गूंजि-गूंजि डूले ॥३॥
अलि गाती बजाती औ नृत्य करे।
पिय प्यारी झूले गलबाँह धरे ॥
लखि "रूपलता" छवि होश भूले ॥४॥

॥ झूला ॥

हरे-हरे कदम के डार झूले सरकार प्यार मतवाला ।
सावन का शौक निराला ॥१॥
सरयू सरिता लहराती हैं, अति अद्भुत कला दिखाती हैं ।
करती हैं मधुर पुकार तरङ्ग की माला ॥ शावन का शौक०॥२॥
रिमिझिमि-रिमिझिमि घन बरषत है, हरे-हरे अवनि तल
दरसत है । प्रकृति के अजब शृङ्गार सुप्राविट काला ॥
सावन का शौक निराला ॥३॥
कटि लचकि-लचकि दोउ झूलत हैं, लखि "रूपलता" हिय
फूलत हैं । झूलन का ललित बिहार बहुत घर घाला ॥
सावन का शौक निराला ॥४॥

॥ झूला ॥

झूला झूले पिय झमकि उमंग में, किशोरीजी के संग में ना ॥
मन मस्तानां मद में छाक, हरे-हरे साजि के पोशाक,
मानो रंगि रहे सावन के रंग में किशोरीजी के संग में ना ॥१॥
धरि-धरि के गल बाँह, करि-करि के नव चाह,
बिजुली चमके घनश्याम अंग-अंग में । किशोरीजी के० ॥२॥
गोरी "रूपलता"सी किशोरी, श्याम समलिया सुन्दर जोरी,
जमुना जल मानो मिलि गये गंग में, किशोरीजी के संग० ॥३॥

* झूला *

झूलना सम्हल कर श्याम, तनि धीरे धीरे ।

लाड़िली किशोरी मोरी, वयस की थोरी प्यारे !।।
अति सुकुमारी सुख धाम तनि धीरे धीरे ।।१।।
लट सुरझादो तनि बेनिया डोलादो प्यारे !।
देखो ! अंग-अंग चूये घाम, तनि धीरे धीरे ।।२।।
फहरत सारी जड़ी चादर किनारीदार।
"रूपलता" लहरे तमाम, तनि धीरे-धीरे ।।३।।

* कजरी *

सैयां धीरे से झुलावो मेरा हियरा डेराय ।
दोहा-झोंकाँ झोकत जोर से, जव तुम राज कुमार ।
तब डरपत अति मोर-मन ताते झुलहु विचार ॥
पैयाँ लागु मैं तुम्हारी देहु धीरे से झुलाय ॥ १ ॥
दोहा-झोका झोकत में पिया-लागत पवन झकोर ।
झीन वसन फहरात है, अंग उघारत मोर ।।
डरे कोमल कलेजा-दुजे मन सकुचाय ॥ २ ॥
दोहा-तुम रसिया रगरी वड़े, मानत नाहि निहोर ।
दया शील नहीं रंच है, पवि सत हृदय कठोर ॥
"रूपलता" झोंका भारी झुला मोको न सोहाय ।।३।।

* झूला *

झूला लगी दिलदार की चलो झूलिये प्यारी ।
यही सबों की चाह श्री मिथिलेश दुलारी ।।१।।
मोती मणि मुक्ता प्रवाल की बनी सारी ।

झूले किशोर पै किशोरीजी बिना खारी ॥२॥

सखी के विनय सुनि स्वामिनीजू होके तैयारी ।

झूलन लगी पिय संग में वलि "रूपलता" री ॥३॥

* झूला *

हँसि झमकि झुलावे सिया के पिया ।

झूले झमकि झमा-झम पिया संग सिया ॥१॥

फहरे चीर चद्दर जुलुफ-लट हलैं ।

श्रम शीकर मुसुकन गजब किया ॥२॥

घनश्याम में बिज्जुलता चमके ।

रघुनन्दन श्री मिथिलेश-धिया ॥३॥

दोउ लिपटि-लिपटि गलबांह धरे ।

लखि "रूपलता" की जुरात हिया ॥४॥

* झूला *

साजि-साजि सोरहो श्रृङ्गार पिया प्यारी झूले ।

सरयू-सरि किनार सघन कदम डार ।

हरे-हरे बल्ली के बहार, देखि मन भूले ॥१॥

कोइली कुहुक नाद, सरस पच्छी बिबाद ।

भँवर करत गुँजार, रंग-रंग फूले ॥२॥

बरषे झमकि मेघ, बिजुली धनुष रेघ,

"रूपलता" गावती मलार, उपमा न तूले ॥३॥

❋ झूला ❋

झूले श्यामा के संग श्याम, समलिया सावन में।
सरयू किनारे सोहे नान्हि-नान्हि गछिया।
लहरत लता ललाम समलिया सावन में ॥१॥
लचकि-लचकि हंसि झमकि झुलावहिं।
नइ-नइ नवला वाम समलिया सावन में ॥२॥
रिमिझिमि-रिमिझिमि परत फुहारे।
भीजत दोउ सुखधाम समलिया सावन में ॥३॥
"रूपलता" दोउ छवि पर वारौं, कोटि-कोटि रतिकाम ॥४॥

❋ झूला ❋

यह जोरी झूले मेरी आँखों में।
श्याम गौर चित्तचोर मनोहर, मोहन रति-पति लाखों में ॥१॥
कोय कुञ्ज पुतरी की पलना, पलक कदम तरु झाँखों में ॥२॥
"रूपलता" हिय उठत हलोरे, सकल भुवन सुख राखों में ॥३॥

❋ गजल ❋

बेटी श्री मिथिलेश की प्यारी औ सुकुमारी झूले।
बिज्जुसी चमके सिया, पिय श्याम घनकारी झूले ॥१॥
अलि हजारों हैं खड़ी, लली लाल के चारो तरफ।
तारागण के मध्य जनु युग चन्द्र नभचारी झूले ॥२॥
श्री प्रमोद विपिन सरयूतट ललित श्रावण कुञ्ज में।
झमकि "रूपलता" सुघर दोउ, आज पिय प्यारी झूले ॥३॥

* झूला *

उमड़ि घुमड़ि मेघ रिमि रिमि बरषे ।
सावन अन्धेरी रात बिजुली चमचमात ।
भीजत बसन गात बुन्दिया के झरसे ॥१॥
गरजे जलद घोर, सुनत कुहुक मोर ।
नयना झरत लोर, सुनि-सुनि डरसे ॥२॥
छाड़ु छाड़ु हमें लाल, मुझसे करो न ख्याल ।
"रूपलता" तजत न पिय गर करसे ॥३॥

॥ झूला ॥

झूलत राज-कुमार सिया सुकुमारी ।
आसपास ललनागण राजित, भूषण बसन संवार, नयन रतनारी ॥
चौर मोरछल पान-दान कर, राजित सौज अपार, थारवर झारी ॥
नृत्यत युगल सखी दोउ झोंकत, "रूपलता" बलिहार,
प्राण धन वारी ॥३॥

॥ झूला ॥

आली ! दोउ झुलत नवल हिड़ोले ।
श्री जनक-लली रघुवंश-लाड़िले, करि यक-ठौर कपोले ॥
बकन बंक मुशुक्यान लेत सत रति मन्मथ मन मोले ॥१॥
भूषण झमक चमक नाशा-मणि कल कुण्डल श्रुति डोले ।
क्रीट चन्द्रिका चमचमात नूपुर कटि किंकिणि बोले ॥२॥

छुम छननन नृत्यत अलि गावहि । वाद्य सु मधुर कलोले ।
"रूपलता" निरखत हिंडोल सुख बिनु प्रयासभव खोले ॥३॥

॥ झूला ॥

आली ! मजेमें झुले पिय प्यारी ।
रंग महल ढिग लता गुल्मयुत, जहं अद्भुत फुलवारी ॥१॥
हुलसि-हुलसि झोंकत जब लालन, विहंसति सिय सुकुमारी ॥२॥
श्रमकण कलित ललित गालन पर, छुटति अलक अहिकारी ॥३॥
भुज अंशन धरि-धरि दोउ झोंकहिं, "रूपलता" वलिहारी ॥४॥

॥ झूला ॥

घन वरषत मन्दन मन्द अली ।
लखि विकसित सिय पिय कंज-कली ॥१॥
ऋतु पावस सावन मास भली ।
दोउ झमकि झुलत श्री अवध गली ॥२॥
गावहि कोकिल - स्वर सखि कजली ।
नृत्यहिं सुर नर मुनि नाग लली ॥३॥
देखन पुर - वासिनी युत्थ चली ।
लखि "रूपलता" सब जात वली ॥४॥

* झूला *

प्यारी झुलेरी आली ! प्यारे झुलारहे हैं ।
रेशम के डोर ऐंचत श्रम विन्दु छा रहे हैं ॥१॥

झीने वसन सियाके - फहरात झोकने पर ।
पिय कंज - कर संवारे मन्मथ लजा रहे हैं ॥२॥
भुज अंश धारते वे क्या शौक से छवीले ।
गाना सुना सुनाकर प्यारी रिझा रहे हैं ॥३॥
हंसती हैं मैथिली जब सन्मुख पिया के होकर ।
लखि "रूपलता" प्रीतम वलिहार जा रहे हैं ॥४॥

* महारास पद *

॥ झप ॥

प्यारी सुधर श्याम रास रचावे ।
सखिन सहश्र ठट्ट, श्री सरयू तट, सोम श्रवण वट धूम मचावे १ श्री जनक लली के संग थेइ-थेइ नटत रङ्ग । बीण वासुरी मृदंग सखिन वजावे ॥ २ ॥ छुम छननन ध्वान लेत तननन तान, मधुर-मधुर गान "रूपलता" गावे ॥ ३ ॥

॥ रास ॥

नट वर श्याम नटै श्यामा संग, मधुर-मधुर स्वर गारहे । चहु-दिशि अलिन-साज धरि कर-कर, रागिनी राग लजा रहे ॥ १ ॥ मध्यहि दम्पति भृकुटी-भंगते, चहुदिशि सखिन नचा रहे । जनु अलात शिशुमार चक्र वत् रासस्थलि सुख्र छा रहे ॥ २ ॥ कोउ दक्षिण कोउ नचै बाम-गति, रवि शशि राहु छका रहे । "रूपलता' बिधि समा जात छन, परमानन्द भुला रहे ॥ ३ ॥

॥ रास ॥

नाचे श्याम सुन्दर छुम-छुम छननन ।
गोरी चित्त-चोरी सिय नृत्यति, तान लेति तननन तननन ॥ १ ॥ कटि लचकति पग परसि-परसि महिं, नूपुर ध्वनि किंकिणि कननन ॥ २ ॥ गाबति बजावति नटति चहुदिशि अलि, भूषण पट झमकत झननन ॥ ३ ॥ ताता थेइ ताता थेइ धिकट-धिकट ध्वनि, "रूपलता" रमकत रननन ॥ ४ ॥

* रास *

नटवर दोउ नटत आज अलिन मध्य माई ।
श्री प्रमोद विपिन-मध्य, बन अशोक रस-अवध्य, सोम-श्रवण वट की छाह रास रहस छाई ॥ १ ॥ श्री चन्द्रकला वीण झीन, सुभगा सु मृदंग लिन । चारुशिला बासुरी सुताल-स्वर बजाई ॥ २ छुम-छुम पग चटकि लटकि नृत्यत कटि लचकि-लचकि, नूपुर-ध्वनि किंकिणि की सरसत मधुराई ॥ ३ ॥ धरि-धरि गलबाँह प्यारी-नृत्यत लहँगा पसारी, करज चिबुक पकरि-पकरि, निरखत सुघराई ॥ ४ ॥ कबहुं अधर चूमि-चूमि, नटत मत्त झूमि-झूमि, कबहुं करि-करि-भ्रूभङ्ग नयन को लड़ाई ॥ ५ ॥ अलिगण महा-मोद अचति-ह्वै-ह्वै सुधिभोर नचति, "रूपलता" ताता थेइ मचति जयति छाई ॥ ६ ॥

* रास *

क्या ? मधुर मनोहर जोरी, दोउ राज-किशोर-किशोरी ।

श्रीकनक महल में राजे, जग-मग जग-मग छवि भ्राजे। घन श्याम राम सिया गोरी ॥ १ ॥ शिर क्रीट चद्रिका झल के, अंग-अंग भूषण छवि छलके, पट पीत रतन की छोरी ॥ २ ॥ लट उरझि जुलुफ घुंघुरारी, कल कमल नयन कजरारी। लखि "रूपलता" तृण तोरी ॥ ३ ॥

॥ रास ॥

निहारूं जहां मैं वहां श्याम सुन्दर।
बाहर श्याम सुन्दर भीतर श्याम सुन्दर ॥ १ ॥
झलकते लता ओ पता में वही है।
हरा श्याम सुन्दर भरा श्याम सुन्दर ॥ २ ॥
दिखाते दसो ही दिशा में वही हैं।
छिपे श्याम सुन्दर प्रगट श्याम सुन्दर ॥ ३ ॥
है शशि सूर्य में "रूपलतिका" उन्ही की।
चमक श्याम सुन्दर दमक श्याम सुन्दर ॥ ४ ॥

॥ रास ॥

चित चितवन में चुराय लियारे जुल्फ वाले समलिया लटुरी लटुरी लट-जाल वदन पर, मेरे मन मृगको बझाय लिया रे जुल्फ वाले समलिया ॥१॥ चमकि तरल तलवार हँ सनध्युति, हिय हरिणी पै चलाय दिया रे जुल्फ वाले समलिया ॥ २ ॥ "रूपलतहि" घायल करि छुप गये कौने निठुर ये सिखाय दिया रे जुल्फ वाले समलिया ॥ ३ ॥

॥ पद ॥

जादू भरि हैं लाखो आंखो में श्याम तेरी ।
मुझको तरफ न ताको डरती जिगर है मेरी ॥ १ ॥
जिस-जिस तरफ तू ताका जगसे बेकार कर के ।
सुझता नहीं कुछ उनको, तजि श्यामली अन्धेरी ॥ २ ॥
तेरे नजर को परते बावरी हुईं अनेको ।
कुछ है दवा न उनकी, हारे हकीम घेरी ॥ ३ ॥
बहुतो फंसे उरझ कर, तेरी सु "रूपलतिका" ।
धोखाहुं से जो पड़गए चञ्चल नयनके फेरी ॥ ४ ॥

॥ पद ॥

तेरी सुरति पर मैं वारी समलिया ।
जो कल-रव कोकिल मैं होती, कुकती मैं तेरी अटारी समलिया १
जो पपिहा पच्छी मैं होती, पिउ-पिउ रटती निहारी समलिया २
जो घनश्याम मयूरी होती, नचती मैं तेरे अगारी समलिया ३
चन्द्र बदन की चकोरी होती, चखती मैं "रूपलता" री समलिया ४

॥ पद ॥

श्यामसुन्दर पिया मैं तुझे हिया में जोगाऊं ।
जोइ-जोइ तुम चाहहु मैं सोइ-सोइ,
लखि छन-छन मनकी रुचि पुराऊं ॥१॥
जब मैं भूख की रुचि लखि पैहों,

चतुर प्रकार षट-रस को पवाऊं ॥२॥
जब मैं प्यास की रुचि लखि पैहों,
गङ्ग यमुन सरयू को मैं बहाउं ॥३॥
जब मैं शयन की रुचि लखि पैहों,
पय-फेन सेज पटुका मैं बनि जाऊं ॥४॥
"रूपलता" पिय रुचि जब पैहों,
अनुपम रस अधरामृत चखाऊं ॥५॥

॥ झूला ॥

तेरे मधुर-मधुर मुसुक्यान समलिया मन मोहे।
घुंघुरारी-घुंघुरारी, ढीले अति कारी-कारी,
जुलुफन की लटकान समलिया मन मोहे ॥१॥
बड़े-बड़े अनियारे, रतनारे कजरारे,
रस-भरे तिरछी तकान, समलिया मन मोहे ॥२॥
लटकि-लटकि चाल, मानो बिषधर ब्याल,
"रूपलता" को हरे प्राण समलिया मन मोहे ॥३॥

॥ होली ॥

चित्त को चुराय लिये जाय, जुलुफिया वाले।
मोहन बदन पर मदन अनेकों लाजे,
रमा रति जिया ललचाय, जुलुफिया वाले ॥१॥
अधर अरुण पर छाई पान की ललाई,
मन्द-मन्द मृदु मुसुक्याय, जुलुफिया वाले ॥२॥

माशूक मनोहर ये आशिक अनेकों फँसे,
"रूपलतिका" में ऊरझाय,जुलुफिया वाले ॥३॥

* पद *

आँखे श्यामसुन्दर की आँखे से लड़ गईं।
बिना भाला बरछी कटारी के मर गईं ॥१॥
फूटी हैं तभी से सूझे न कहीं कुछ,
केवल मनमोहन छवि दिल में गड़ गई ॥२॥
हूं बाहर से अन्धे, भीतरही निहारू,
ए मन मीनसी छवि दल दल में पड़ गई ॥३॥
जगत "रूपलतिका" झुठे क्या निहारू,
ये गागर महा छवि सागर से भर गई ॥४॥

॥ पद ॥

एकवार आजा प्यारे हमरा भवनमा आहो सजनमा राघो।
देखे बिना नैना अकुलाय आहो सजनमा राघो ॥१॥
अहाँ के बेगर लागे सून अगनमा आहो सजनमा० ॥
कुल परिवार न सोहाय आहो सजनमा राघो ॥२॥
गोल कपोल पर डोले अलकनमा आहो० ॥
कुण्डल कर्ण में ओझराय आहो सजनमा राघो ॥३॥
अरुण अधर पर डोले बुलकनमा आहो० ॥
देखि-देखि जिया ललचाय आहो सजनमा राघो ॥४॥

कजरारी कोरदार कमल नयनमा आहो० ॥
"रूपलता" लिग्रौ न मिजाय आहो सजनमा०॥४॥

॥ पद ॥

छवि मन मोहनी दिखाजा रे समलिया ।
चन्द्र मुख चन्द्रिका चखाजा रे समलिया ॥१॥
छाई लालिमा अधर दशन में नागर पान चबाते हैं ।
नयन सयन करि नव-नागरि पर मंद-मंद मुसुक्याते हैं ॥
मेरी गलियों में जरा आजा रे समलिया ॥२॥
कुण्डल गोल कपोलन डोले, जुल्फन इत्र सुधारे हैं ।
नाशामणि हलरात अधर पै कमल नयन कजरारे हैं ॥
"रूपलता" नयनों मैं समाजा रे समलिया ॥३॥

॥ स्तुति ॥

शरण सुखद जानि सबसे सुलभ मानि,
पद लपटानि यह चेरी हे किशोरीजी ।
महा अघ ओघ खानि पतित कुटिल जानि,
मोहि जनि त्यागु हम तेरी हे किशोरीजी ॥
शिशिक शिशिक तनु तजि दई धाम निज,
बर ये विरद केहि केरी हे किशोरीजी ।
आर्य्य के करुण कार्य न निरपराधी कोऊ,
तेरी बच बालमीकि टेरी हे किशोरीजी ॥

कौशल किशोर जश यदपि विशाल अति,
तव यश चन्द्रिका अंधेरी हे किशोरीजी ।
महा अपराधी काक राक्षसी जो बध योग्य,
ताहू पर कृपा दृग फेरी हे किशोरीजी ॥
सर्वेश्वरी चन्द्रकलादि अनन्त आलि लिये,
श्याम संग बिहरत घेरी हे किशोरीजी ।
"रूपलता" कृपा करि लीजिये बुलाये वहाँ,
दीजिये दिखाय मुद ढेरी हे किशोरीजी ॥

*** पद ***

सियाजू मोहि संभारत आवे ।
निरखि अग्नि की लपट मनोहर, ज्यों बालक हँसि धावे ।
पुत्र-वत्सला माँ आतुर अति, धा करि गोद उठा वे ॥ १ ॥
कफ मल मूत्र लार कीचड़ को, लगादेन नहिं पावे ।
नयन ओट के तनिक होत हीं, खोजन चहुदिशि धावे ॥ २ ॥
निरखत रहत सदा मुखही को छन-छन दूध-पिला वे ।
"रूपलता" रोवत च्योंकत लखि झार फूक करवावे ॥ ३ ॥

॥ पद ॥

सदा ही से हूं मैं तुम्हारी सियाजू
यहि बल हृदय में है भारी सियाजू ॥ १ ॥
किया है चरण से विलग तू जभी से
हुआ हूं तभी से दुखारी सियाजू ॥ २ ॥

भटकता फिरू मैं अनेको जनम से
हुई न दशा क्या हमारी सियाजू ॥३॥
कुपुत्रो जायेत कुमाता न भवति
बिरद "रूपलतिका' पुकारी सियाजू ॥ ४ ॥

॥ पद ॥

सियाजू हे अनूप रूप हैं उदार तेरा ।
इसी से रहते हैं वस में सदा सरकार तेरा ॥ १ ॥
वदन मदन के चन्द्रमामें हरिणी सी आंखे ।
भरे चितवन में चतुर ओर सुधा-सार तेरा ॥ २ ॥
दशन के दमक मोति-लर अनार के दाने ।
क्या ? गजव करे मुशुक्यान के वहार तेरा ॥ ३ ॥
लटुरी लट के लटक नागिनी सी डँस जावे ।
इसी विष से वने हैं श्याम हृदय हार तेरा ॥ ४ ॥
गिरा उमा रमा रती सची सुहागिनी जे ।
गुंजारे "रूपलता" में अलि हजार तेरा ॥ ५ ॥

॥ पद ॥

चरण कमल दिय दिखाय किशोरी जी हे ।
सब दिन से हमर छी अहां अहीं के हम
तव किय दैली विसराय किशोरी जी हे ! ॥ १ ॥
अहां के वेगर नीको लागे नहीं घर मोरा ।
छन-छन जिया अकुलाय, किशोरी जी हे ! ॥ २ ॥

अहां के दया वेगर रीझे न श्याम सुन्दर।
करे कोउ कितनो उपाय किशोरी जी हे !॥ ३ ॥
"रूपलता" वार-वार बूड़े भव सिन्धु-धार।
अव दुःख सहलो न जाय ॥ ४ ॥

❊ पद ❊

अपनी अँचरा की ओट में छिपाउ हे सिया !।
अघ आग में जरैछी हम वचाउ हे सिया ! ॥ १ ॥
जे-जे मानलक मन से कैली, पाप से तनिको न डेरैली,
सजा सुनि अव पराइछी कहँ लुकाउ हे सिया ! ॥ २ ॥
दुःख वस कहां-कहां त गेली, सुखी तनिको कतहु न भेली,
अहिं कहु यहन शरण हम छाड़ि कहां जाउ हे सिया ! ॥ ३ ॥
हमछी अहीं नैहर के वासी वनालू हमरा अपन दासी;
"रूपलता" से खवासी अव कराउ हे सिया ! ॥ ४ ॥

॥ पद ॥

एकवार ताकू हमरा ओरी, किशोरी जी हे !
वहुत दिना से हम आसरा लगअली से,
कहिया करव कृपा कोरी किशोरी जी हे ! ॥ १ ॥
भला ओ बूड़ा सियाजू ! जेछी से अहीं के हम।
जनि अवगुण देखु मोरी, किशोरी जी हे ॥ २ ॥
अहिं के चरण हैं हमर तन-मन धन,

से केनाक होइ गेल चोरी, किशोरी जी हे ! ॥ ३ ॥
"रूपलता" के मन भागे भुलि छन-छन ।
अहिं वान्धि दिऔ कसि डोरी ॥ ४ ॥

*** पद ***

मैंहूं तुम्हारी तूं हैं मेरी हे सियाजू ।
तूं स्वामिनी हैं मैं हूँ चेरी हे सियाजू ॥ १ ॥
ब्रह्म तूं हैं जीव हूं मैं तेरी हे सियाजू ।
भोग्य हूं तूं भोगी सबकेरी हे सियाजू ॥ २ ॥
शेष हूँ तूं शेषी श्रुति टेरी हे सियाजू ।
मोहि तोहि नित्यनाता ढेरी हे सियाजू ॥ ३ ॥
ताते जनि कीजे अब देरी हे सिया जू ।
"रूपलता" राखु निज नेरी हे सियाजू ॥ ४ ॥

*** पद ***

हमारी किंशोरीजी सब कुछ हमारी ।
तो गैरों से होगा क्या ? करके चिन्हारी ॥१॥
कमल की लगन रवि की रश्मियों से ।
सुधाकर प्रभा कर सके क्या ? सुखारी ॥२॥
पतित पावनी गङ्गा सरयू धाराएं ।
स्वाती-जल बिना पपीहा है दुःखारी ॥३॥
बदन चन्द्र पै "रूपलतिका चकोरी ।
मिलूंगी अवश अग्नि में तन को जारी ॥४॥

*** पद ***

सभी के दिल में दिलवर को समाना बात मोस्किल है ।
समाया है भि दिलवर तो निभाना बात मोस्किल है ॥१॥
फका को मारना मुख में भी धर लेना ये सहजे है ।
मगर लोहे के दाने को चबाना बात मोस्किल है ॥२॥
अमर होता है जिस अमृत से को उसको नहीं पीवे ?
मगर मरता है जिस विष से पीजाना बात मोस्किल है ॥३॥
बनी सुन्दर लगी डोरी उसे सब कोई उड़ा सकते ।
मगर धागा बिना गुड्डी उड़ाना बात मोस्किल है ॥४॥
मिलाना दूध में पानी कठिनता कुछ न इसमें है ।
मगर फिर तेल में जलको मिलाना बाब मोस्किल है ॥५॥
लगी पौधा है "रूपलता" की श्याम तमाल तरुवर पै ।
लतरकर जो लिपटि जावे छुड़ाना बात मोस्किल है ॥६॥

॥ पद ॥

हंसते हुए से मुख चन्द्र को दिखा जावो ।
श्याम मेरे आ जावो श्याम मेरे आ जावो ॥
कौशिल्या-नन्दन तुम नृपति दुलारे हैं ।
भक्त-वत्सल श्रीकिशोरीजी के प्यारे हैं ॥
छबि को दिखाके मेरे मन को लुभा जावो ॥१॥
चरण के रज से अहिल्या को उद्धारे थे ।
पिता के समान गृद्धराज को तू तारे थे ॥

शबरी के फल खाये थे जैसे तू खा जावो ॥२॥

भालू बन्दरों के साथ मित्रता दृढ़ाई थी ।
पत्थर की गति सेतु-बांध में दिखाई थी ॥
मेरे जैसे पत्थर को तार के बता जावो ॥३॥

व्याकुल विभीषण शरण महं आया था ।
त्राहि कहते ही लङ्का के राजा बनाया था ॥
मैं भी हूँ व्याकुल मुझे आके अपना जावो ॥४॥

गज के उद्धार में जो शीघ्रता दिखाई थी ।
द्रोपदी की लाज सभा-बीच में बचाई थी ॥
भक्त प्रह्लाद जैसे दुष्टों से बचा जावो ॥५॥

तेरे बिना चैन नहीं नीन्द नयनों में आती ।
दुनियां की चीजें "रूपलता" नहीं सुहाती ॥
जलते हुए हृदय की आग को बुता जावो ॥६॥

॥ पद ॥

सुन्दर मानुष के शरीर, फिर मिलना है कठिन सुमिर,
भजन करि लिओ, येहिरे उमिरि या में ॥ १ ॥
कहते भजन करेंगे काल्ह मरने को करते नहीं ख्याल,
प्राण छुटि जैहे क्षण पल घरिया में ॥ २ ॥
मातु पिता बन्धु सुत दार, घर संपति सब, कुल परिवार,
मत भूलो यह माया के बजरिया में ॥ ३ ॥
सद्गुरु शरण गहो तत्काल-करलो "रूपलता" को ख्याल,
निश्चै पहुची जैहो प्रभु की नगरिया में ॥ ४ ॥

॥ पद ॥

कञ्चन पिजरवा से उड़ि अब जैवे सुगनमां रे।
कब हरि-गुण गैवे सुगनमा रे ॥ १ ॥
यहन पिंजर अब फिर नहीं पैवे सुगनमारे।
तब पिछे पछतैवे सुगन मा रे ॥ २ ॥
जनम-जनम तूं बहुत दुःख पैवे सुगनमा रे।
कबहू न जुरैवे सुगनमा रे ॥ ३ ॥
"रूपलता" सद्गुरु कहां पैवे सुगनमां रे।
दुःख केकरा सुनैवे सुगनमा रे ॥ ४ ॥

* पद *

है कहानी कह रहे सब राम नामहिं सत्य है।
राम नामहि सत्य हैं औ यही सबके गत हैं ॥ १ ॥
घृणा में हैं राम नाम, ऐश्वर्य्य में भी राम-राम
रामाश्रय से राम-कृपासे बोलने के लत हैं ॥ २ ॥
राम-राम कुटुम्ब दोशत में, नमस्कार की हैं प्रथा।
राम-दो राम तीन राम ये जोख्रन हारे मत है ॥ ३ ॥
राग-राम जपे सदा श्वासा ये अजपा जाप को।
जीव आत्माराम "रूपलता" ये भूत असत्य है ॥ ४ ॥

* पद *

चलु-चलु सखिया हे पिया के नगरिया जहाँ षट् ऋतु के बहार।
सप्त आवरण के है पिया के नगरिया सप्त आवरण परे पार ॥१

सप्त आवरण के है पिया के महलिया, सप्त आवरण दरवार।
सप्त आवरण के है अटा हे अटरिया सप्तरंग विभव अपार ॥ २
सप्त-सप्त रंग सव सखि हे सहेलिया, सप्त-सप्त रंग के शृंगार।
"रूपलता" सप्तरंग पिय-प्यारी विहरत, सप्त-सप्त रंग के विहार ३

*** पद ***

झट-पट से अव घुंघट उघार गे वहुरिया।
प्रीतम की सुरतिया निहार गे वहुरिया ॥ १ ॥
इस नहिरा में सव दिन रह कर प्रीतम को विसराया तूं।
सखी सहेली संग में भुलकर-नाहक जन्म गमाया तूं ॥
अव ससुरा जाने को सजु शृंगार गे वहुरिया ॥ २ ॥
कुल परिवार तूं जिस को समझा सो ठगता धन तेरा है।
जिस घर को कहता तू मेरा-सो दो दिनका डेरा है।
घर अपना सव दिन का है उस पार गे वहुरिया ॥ ३ ॥
महा मोहकी नदी वहति है उस में वुड़कर मरना है।
सतगुरू लिए जहाज खरे हैं, सहजे पार उतरना है ॥
"रूपलता" करू प्रीतम संग विहार गे वहुरिया ॥ ४ ॥

*** पद ***

है यह अगम अनूप रहस्य।
सद्गुरू कृपा ज्ञान जो पावें, होत सीय-वर वश्य ॥ १ ॥
नहिं मानहुं तो हृदय विचारो, अग्रादिक मुनि पश्य ॥ २ ॥
भुज उठाइ यह "रूपलता" प्रण, सियवर मिलहिं अवश्य ३

✽ पद ✽

प्रीतम के घर दूर कहाँ कैसे कोउ जावे ॥
विधि शङ्कर हरिहू हिय हहरत-अपर समुझि संकुचावे ॥ १॥
लोकन प्रति रिपु,उर्ध्व गमन लखि, छन-छन माहिं गिरावे ॥२
श्री सद्गुरु सियवर करुणा बल, "रूपलता" हूं पावे ॥ ३ ॥

॥ पद ॥

प्रीतम के घर निकट है यदि गुरू देव वतावे ।
सप्तावरण अखण्ड युत यह तनु,-पर परधाम सिधावे ॥ १ ॥
कल्पतरु-तर कनकमहल मह, कञ्ज करणिका ध्यावे ॥ १ ॥
शशि रवि अनल वीज विच सियवर, "रूपलता" झट पावे ३

॥ पद ॥

मनपापीन मासे कहनमा, कैसे मिलिहैं सिया के सजनवा ।
प्रभुसें मिलने को वेद बतावे, काम क्रोध लोभ मोह हटावें, दम संयम नेम बढ़ावे, भुल कर न कुमग पर जावे, इनमें एको नही मेरे तनमा कैसे मिली हैं सियाके सजनवा ॥ १ ॥ मैं क्रूर कुटिल खल भारी, लोभी लम्पट व्यभिचारी, धिकशरण हैं "राम दुलारी, सोवत नित पांव पसारी योंही बीतलें जात जिवनवा, कैसे मिलिहैं सिया के सजनवा ॥

॥ पद ॥

हाय वितल जाय कंचन उमिरिया, माया के वजरिया में ॥१॥
सौदा एको न बुझाय, जेकिनी सेहो विलाय,दाम घटलजाय रतन,

गेठरिया, माया के वजरिया में ॥ २ ॥ वनिया बड़े-बड़े चालाक, सोना कहिके वेचे खाक, देखहु से नही खुलत नजरिया माया के वजरिया में ॥ ३ ॥ "रूपलता" जो सस्तामाल, उसपर परता है नहि ख्याल बाटे संतजन खोली के कोठरिया माया के वजरियामें हाय वि० ॥ ४ ॥

॥ झूला ॥

तिलक कन्ठी विना कवहुं नही भगवान रिझते है।
तिलक कन्ठी को धरते ही कृपानिधान रिझते हैं ॥ १ ॥
तिलक कन्ठी सुहै संस्कार सर्वोत्तम भगति पथ में। तिलक कन्ठी को देखतेही हुलसिजन जान रिझते हैं ॥ २ ॥
तिलक कन्ठी के धरते ही बने पापीभी धर्मात्मा। पितरगण के सहित सुरगण चढे बिमान रिझते हैं ॥ ३ ॥ तिलक कन्ठी करोड़ोका करे कल्यान "रूपलता" कहूँ क्या खुदही सीताराम धरि धनुवाण रिझते हैं ॥४॥

॥ पद ॥

छोरु छोरु दुनियां के व्यवहार गे बहिनियाँ।
कंठी चन्दन से करिऔ शृङ्गार गे बहिनियाँ ॥१॥
सोना चान्दी के भूषण को वृथा भार क्यों ढोवोगी।
अंत समय कुछ काम न ऐहैं सिर धुनिधुनि के रोवोगी ॥
ताते दिऔ अंग से निकार गे बहिनियाँ ॥२॥
कर्णफूल तुलसी की झुमका तुलसी के कंठसर माला।

बाजू बाँध बिजावठ पेन्हिऔ तुलसी के बँगुरीवाला ॥
तुलसी के हयकल गृवहार गे बहिनियाँ ॥३॥
पीतराम रज के चन्दन करू जो तारे गौतम नारी ।
ललित चन्द्रिका बिन्दु मुद्रिका रामनाम धनुशरधारी ।
"रूपलता" भजु श्री युगल सरकार गे बहिनियाँ ॥४॥

॥ श्रीसद्गुरु स्तुति ॥

जय जय गुरु-देवा भवनिधि खेवा बिनु जनसेवा सुखदाता ।
जय जय प्रभुपालक अघतम घालक हमसब बालक पितु-माता ॥
जय जय गुणमाला दीन-दयाला परम कृपाला भव-हारी ।
जय जय भगवाना हर अज्ञाना चतुर सुजाना मुदकारी ॥१॥
जय जय यश-गन्धू दीन-सुबन्धू करुणा-सिन्धू विज्ञानी ।
जय जय मुनिनायक सबसुखदायक धन सबलायक रसरासी ॥
जय जय धृत भारा परम उदारा सब श्रुतिसारा परकासी ॥२॥
जय जय कलि त्रासक संसृति-नाशक ब्रह्म प्रकाशक जगधारे ।
जय जय परधामी सद्गुरु स्वामी अति निष्कामी यश छाई ॥
जय जय वर पंडित शुभगुणमंडित ज्ञान अखंडित नभ व्यापी ।
जय जय भवचालक विधिहरिपालक पुनि शिवघालक परतापी ॥
जय जय ऋषि ध्यानी परम अमानी अमृत-वाणी परमोदी ।
जय जय सुरझारी "रामदुलारी शरण" तुम्हारी धरु गोदी ॥४॥
दोहा-श्री सद्गुरु स्तुति अमल, पढ़हिं जो विमल विचार ।
जन्म-मरण नहीं होइ तेहि, पुनि-पुनि यह संसार ॥

* कवित्त *

षट चार प्रकार के भोजन से नहीं तृप्ति हुई चटते-चटते ।
दिन बीतल जात बृथाही अरी ! बहुबात सदा छटते-छटते ॥
"रसरूप" मिले नहीं सार कहीं श्रुति शास्त्र मही अटते-अटते।
रसना चखु राम के नाम सुधा-रस रात दिना रटते-रटते ॥ १

समाज प्रेस, मधुबनी ।